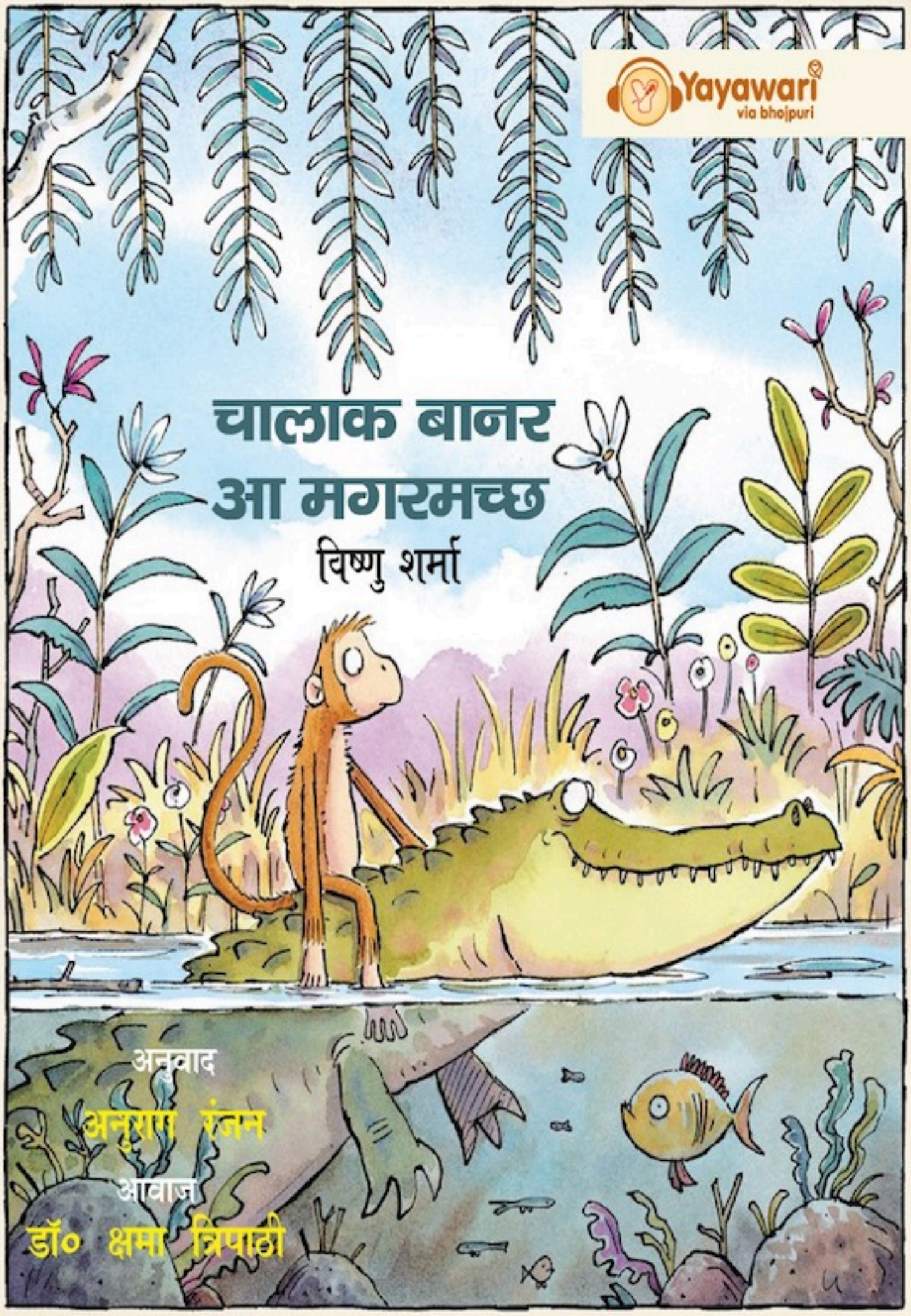

Yayawari
via bhojpuri

चालाक बानर आ मगरमच्छ

विष्णु शर्मा

अनुवाद

अनुराग रंजन

आवाज

डॉ० क्षमा त्रिपाठी

चालाक बानर आ मगरमच्छ

लोककथा

अनुवादक-अनुराग रंजन

“ईश्वर बृज” फ़ाउंडेशन के तहत माटी परियोजना के अंतर्गत अनूदित

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मई, 2023

एगो बड़हन घना जंगल रहे, जहवाँ मय जानवर एक दूसरा संगे खुबे पेयार से रहत रहे। ओह जंगल के बीचे एगो बहुते सुनर आ बड़हन तालाब रहे। ओह तालाब में एगो मगरमच्छ रहत रहे। तालाब के चारों ओर ढ़ेर सारा फलन के गाछ लागल रहे। ओहिमे से एगो गाछ पऽ एगो बानर रहत रहे। बानर आ मगरमच्छ एक दूसरा के खुबे निमन दोस्त रहे लो।

बानर गाछ से मीठ आ स्वादिष्ट फल खाये आ संगही अपना इयार मगरवो के देवे। बानर अपना इयार मगर के खास खेयाल राखे आ मगरो ओकरा के अपना पीठ पऽ बइठा के समूचा तालाब में घुमावे।

दिन निकलत गइल आ दुनों के इयारी गहरात गइल। बानर जवन फल मगरमच्छ के देवे, मगरमच्छ ओमे से तनि सा फल आपन मेहरारूओ के खियावे। दुनों बेकत फलन के खुबे चाव से खाये लो।

बहुते दिन के बाद एक बेर मगर के मेहरारू कहलस कि बानर तऽ रोजिना स्वादिष्ट फल खात रहेला। तनी सोचऽ ओकर कलेजा केतना स्वादिष्ट होइ। उ मगर से जिद करे लागल कि ओकरा बानर के कलेजी खाये के बा।

मगर ओकरा के समझावे के कोशिश कइलस, बाकिर उ ना मानल आ उ मगर से रूठ गइल। अब मगर के मन ना होखला के बादो हऽ बोले के पड़ल। उ